भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 24 अंक : 11 | सोमवार, 26-11-2001 | वार्षिक चंदा : 50-00

ब्रह्मप्रवाह...

वेदकाल से ले करके
पौराणिक और आधुनिक युग तक में
जितने-जितने महामंत्र प्रवर्त हुए हैं
उन सभी में 'स्वामिनारायण' मंत्र की अनोखी विशिष्टता
उसकी सार्वभौमिकता प्रतिपादित करके
मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने उनकी बातों में बताई है।
इस मंत्र से–
काले नाग का ज़हर तक उतर जाता है,
रोग टल जाता है,
विषय के राग टल जाते हैं
काल, कर्म व माया का बंधन छूट जाता है,
और
जीव ब्रह्मरुप हो जाता है।
परंतु, जब-जब ऐसा कुछ होता दिखाई नहीं पड़ता,
तब सभी को शंका होती है कि–
स्वामी की इस बात का भावार्थ और रहस्य क्या होगा ?
यह गुत्थी सुलझाने ब्र.स्व. गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने
प्रगट उपासना का महामंत्र मूर्तिमान किया
और
अक्षरसहित पुरुषोत्तम की सर्वोपरि उपासना की नींव डाली।
भक्त सहित भगवान की इस युगल उपासना का
धाम, धामी और मुक्तों की प्रगटपन की मान्यता में
दृढ़ विश्वास रख कर,
स्वरुपज्ञान की समझ से प्रगट के अनुसंधान सहित
नामी सहित नाम के मंत्रोच्चारण करने पर
उपरोक्त परिणाम अचूक-अवश्य ही आते हैं।
गुणातीत बाग के अ.म.मु. भगतजी महाराज,
अ.म.मु. जागास्वामी, अ.म.मु. कृष्णजी अदा,
अ.म.मु. पूंजाजी बापु तथा पू. बालमुकुंदस्वामी वगैरह
जैसे महामुक्तों ने–
ऐसा जीवन जीकर
मंत्र, तंत्र और यंत्र की मानो एकवाक्यता ही बना दी !
और...
प्रकृति पुरुष से पर के धाम, धामी और मुक्तों की
पृथ्वी पर अखंडित प्रगटपन की यह बात समझा दी।
इस तरीके से दिव्यता की समझ रख कर
भजन करने की-निर्दोषबुद्धि की
अनोखी रीत सभी के लिए यूं सुलभ बनाई।
भरतखंड और सारी मानवजाति इस कारण अनंत काल तक
ब्रह्मस्वरूप गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के –
गुणातीत बाग के महामुक्तों के
और विशेष करके
गुरुहरि योगीजी महाराज के ऋणी रहेंगे ही।
ऐसी स्वरुपनिष्ठा का यह रहस्यज्ञान समझ कर
प्रगट की स्मृति सहित 'स्वामिनारायण' मंत्र की
पुकार करने वाले को
जीतेजी ही आत्यंतिक कल्याण का
अति कठिन-दुर्लभ मार्ग मिल जाता है।
इस परम रहस्य को
हमारे जीवन में जितना घोटेंगे
उतनी जीव के जीवन की-सुहृदभाव की नींव मजबूत बनेगी।
वर्ना, प्रगट और उनके संबंध वालों में दिव्यभाव रखे बिना
तो–
भले ही ढेर साधन व प्रवृत्तियाँ करते रहेंगे तब भी
उपासना और आज्ञा
विपरीत माहौल के कारण या भगवान की योगमाया के बल से

देरसवेर निरर्थक हो कर शायद फलदायी ना भी हों !
परंतु, यदि प्रगट की इस तरह की निष्ठा रख कर
सच्चे दिल से-प्रमाणिकता से
नामी सहित नाम का जो भी हम भजन करेंगे
उससे हर प्रकार से सुहृद्भाव प्रगट होगा
और
उससे ही निर्दोषबुद्धि दृढ़ होगी
व
जीतेजी ही अक्षरधाम का सुख सभी को प्राप्त होगा।
यह रहस्य-मर्मवचन
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने उनकी बातों में समझाया है
और
फिलहाल भी वह सभी को सुलभ हैं।
ऐसे शुद्धभाव से पुकार करने का ठहराव करते ही
हमें उनके प्रगट स्वरुप का अनुभव होने लगेगा।
तो, बेहिचक और निश्चिंतता से
दिव्यता की ऐसी समझ सभी को सुलभ बनो
और
जीतेजी परम सुखी बनो यही अभ्यर्थना !

– प.पू. काकाजी महाराज,1966

✡✡✡✡✡

अन्नकूट कृपाप्रसाद...

...एक बात आप खूब ध्यान से समझना कि हमारी फिलोसोफी–तत्त्वज्ञान सबीज है, हरियाली है। हमारी यानि– गुणातीत ज्ञान। हर एक ने महसूस करा होगा कि ये मंदिर के गेट में दाखिल होते ही प.पू. काकाजी की मूर्ति लगा करके आज जो डेकोरेशन बनाया है वो एकदम लिविंग लगता है। प्रभु यहां प्रगट हैं उसकी एक प्रतीति होती है। कोई और जगह ये बात नहीं मिलेगी।

अबकी बार की जो पत्रिका निकली है, उसमें यह बात खूब अच्छी तरह-बखूबी बताई है। जिनके पास पत्रिका ना पहुँची हो वे यहां से लेकर जाएं-स्टडी करें। एक नॉवल के ढंग से ना पढ़ें। आठ-दस बार उसे पढ़ोगे, तो उस बात का मर्म ख्याल पड़ेगा कि ओहो हमें कैसी जगह–मतलब कैसा स्थान मिला हुआ है–जहां हमें प्रभु का एक सीधा संबंध मिला है।

सत्ता से 'सरकार' व्यापक है, लेकिन 'बाजपेयी' मूर्तिमान सरकार है। इसी तरह प्रभु का सारा नियंत्रण हर जगह पर है, लेकिन ऐसे **गुणातीत संत द्वारा हमें प्रभु का मूर्तिमान सीधा-डायरेक्ट संबंध हुआ है !** ये एक बात हमारे दिमाग में फिट बैठ जाए कि हमें प्रभु का सीधा-डायरेक्ट संबंध है; तो हमें जो भ्रांतियां हैं, डर है, चिंता रहती है, भय रहता है वो कभी रहेगा नहीं।

ऐसे 'संबंध' के बारे हम बोलते रहते हैं, लेकिन एन मौके पर या ऐसे प्रसंग आने पर हम हिल जाते हैं।

'क्या होगा ?
कब होगा ?
कैसे होगा ?
होगा कि नहीं होगा ?
प्रभु को करना भी हो, पर हमारे तो कर्म ही ऐसे हैं, प्रभु भी क्या करेंगे ?'

इन विचारों में यदि डूबे रहते हैं–तो जरुर समझना कि हमारी निष्ठा में कोई पोल है-खोखलापन है।

जैसे कि प.पू. काकाजी पूछते कि– टाटा और बिड़ला के लड़के को विचार आएगा क्या कि कल हम क्या खाएंगे ? नहीं आएगा। अगर आता है, तो इसका मतलब यही है कि उसको पता नहीं कि मेरा बाप कौन है ? इसी तरह 'क्या होगा-कब होगा ?' ऐसे विचार में हम यदि डूबे रहते हैं–तो जरुर समझना कि प्रभु की निष्ठा में हमारा खोखलापन है। कई बार संतों से हम बात करते हैं कि आप तो जानीजान हो, लेकिन किसी ने हमें ऐसा कहा है कि तुम्हारे पर मंगल है, तुम पर शनि की पनौती है, ये है, वो है; तो, आप रक्षा करना। देखो ये कहना पड़ा इसका मतलब क्या ? हमें थोड़ी डगमगाहट हो गई ! ऊपर-ऊपर से बोलेंगे कि– 'आप रक्षा तो करेंगे ही करेंगे, पर हमने आपके कानों में बात डाल दी।' यह क्यों डालनी पड़ी ? टाटा और बिड़ला के लड़के को कभी कह रखना पड़ेगा कि कल के खाने का प्रोवीज़न कर रखना ! कुछ एडवर्स सरकम्स्टान्सिस दिखाई भी पड़ते हों; फिर भी जरुर समझना कि वह हमारी बेटरमेंट-भलाई के लिए ही होगा।

... आज ऐसा बलवान और कोई मंत्र नहीं है, यूं कहने का मतलब ये नहीं कि मंत्रों की नापातोली करी हुई है। बात सिर्फ इतनी है कि मंत्र को मूर्तिमान करी हुई 'प्रगट विभूति'–वो एक स्वामिनारायण की देन है। आज राम-राम, कृष्ण-कृष्ण, महादेव-महादेव, माता-माता कितना ही करते रहेंगे, लेकिन वो माता को हमने देखे नहीं है। वो महादेवजी के दर्शन हमने करे नहीं हैं। वो रामजी के दर्शन भी अभी नहीं हो सकते ! प.पू. काकाजी इसको अलग ढंग से बोलते थे कि अर्जुन के सारथी कृष्ण मानवस्वरुप में मौजूद थे, तो उसके कुरुक्षेत्र का अंत आया। इस तरह हमारे प्रभु-सारथी मानवस्वरुप में मौजूद होने चाहिए। और तभी–वो निश्चिंतता रह पाएगी।

1955-56 की साल में प.पू. काकाजी के ऊपर केस हुआ था। इन्होंने फॉरेन से फर्टिलाईज़र मंगाया था, वो स्टीमर डूब गई ! उसके कारण माल सप्लाई नहीं कर पाए। वो केस

बन गया। 'एरेस्टेड' करके इनके बारे सुबह के अखबार में आया था । हम नए-नए सत्संग में जुड़े हुए थे। मैंने भी टाईम्स ऑफ इंडिया में वो पढ़ा। मुझे विचार आया कि एक तरफ तो सत्संग में बड़े कहे जाते हैं और ऐसे गफले भी करते हैं। शाम को हम सत्संग में गए, तो वो तो बेईल पर छूट कर आ गए थे और हमेशा की तरह फ्रंट रो में बैठे थे। तो मेरे छोटे दिमाग में पहली बात तो यही आई कि बड़े ढीठ लगते हैं। चेहरे पर कोई मलाल नहीं-कुछ नहीं ! जैसे ही सभा की शुरुआत हुई तो गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को एकदम कहा– दादुभाई, बातें करो। प.पू. काकाजी तो फट् खड़े हो गए ! हमें अगर कहा हो तो ? अरे ! खाली सरदर्द हुआ हो या लड़का ठीक मार्क्स नहीं लाया हो तो बोलेंगे– महाराज, आज माफ करो, आज टेन्शन में हूँ। ऊपर से गुरुहरि योगी महाराज ने तो कहा– चैतन्य भूमिका की बातें करो। प.पू. काकाजी ने पहला सेन्टेन्स बोला कि –

'जनक की मिथिला जलने की बात तो आपने सुनी होगी। मेरी मिथिला तो जल रही है। लेकिन मेरा सारथी-योगी महाराज मौजूद है, सो मैं निश्चिंत हूँ।'

ये सुन कर मुझे हुआ कि ये ढीठ नहीं हैं, लेकिन गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ के संबंध के कारण वे निश्चिंत हैं। प्रगट की ये देन है। कुछ भी होगा, लेकिन हमारे प्रभु बैठे हैं ! अर्जुन को मारने की भीष्म ने प्रतिज्ञा करी थी। कृष्ण ही पूछने गए, अर्जुन तो सोया पड़ा था... उसे सोता देख कर श्री कृष्ण को हुआ कि भीष्म की प्रतिज्ञा का इसे शायद ख्याल नहीं लगता। उन्होंने पूछा– अर्जुन ! भीष्म ने क्या प्रतिज्ञा करी है-पता है ? उसने नींद में ही कहा कि हाँ ! श्री कृष्ण ने पूछा– तब भी तुम सोए हो ? प्रभु आप जगे हो सो मैं निश्चिंत हूँ ! – अर्जुन का यह प्रत्युत्तर था।

मानवस्वरुप में प्रगट वो परब्रह्म तत्त्व-इनके साथ का संबंध उसे ऐसी निर्भयता-निश्चिंतता दे पाया। जल्दी से जल्दी हम ऐसा संबंध कर लें यही नूतन वर्ष पर प्रार्थना करनी है।

कई बार मन में होता है कि ये आशीर्वाद जो लिखे हुए हैं, पर ऐसा होता तो दिखाई नहीं पड़ता है। तब ये जरुर समझना कि हमने प्रगट से ऐसा दिव्यभाव से संबंध नहीं करा है। अगर ऐसा संबंध करा हुआ हो, तो अचूक अनफेईलिंग्ली ये सारे रिज़ल्टस हमें मिलेंगे ही मिलेंगे। सो, 'स्वामिनारायण' मंत्र जैसा कोई मंत्र इसलिए महान नहीं है क्योंकि वे प्रगट नहीं है। आयुष पूरी हुई हो, तो कोई जाएगा; लेकिन प्रगट के अनुसंधान से, दिव्यता की मान्यता से 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करो तो काले नाग तक का ज़हर चढ़ नहीं सकता। इस मंत्र से विषय के राग भी टल जाते हैं। सो, एक ही चीज़ करनी है-भजन करा करना है ! हमारी समस्या हल होगी ही।

आगे एक सूत्र लिखा है–'स्वामिनारायण' महामंत्र का छूट से उपयोग करो। 1985 में प.पू. काकाजी ये बोलते रहते थे। हमने प.पू. काकाजी के रुप में प्रभु को तो देखे हैं; नहीं देखे हैं–तो आज प.पू. पप्पाजी हैं, स्वामिजी हैं, साहेब हैं, दिनकरभाई हैं। तो, जब भी कोई मुसीबत आए, इन्हें याद करके 'स्वामिनारायण' मंत्र रटने लग पड़ें। कभी अनहोनी नहीं होगी। सो, छूट से मंत्र का उपयोग करो। हम सबने देखा है कि प्रभु हमारा काम हर टाईम कर देते हैं। कितने सारे इन्सीडेन्सीस हैं ! मंदिर की जमीन चली गई और वह भी हमारी गल्ती के कारण। गड़बड़ी हमारी थी, तब भी मिरेक्यूलसली प्रभु ने हमारा काम करा था। कईयों को तो पता नहीं है कि हमारी जमीन चली गई थी, मिलने वाली ही नहीं थी। कोई रास्ता नहीं रहा था, तब हुआ कि अब भजन करो !

ये हमारी जड़ता है कि बोलते तो हैं कि– प्रभु ! हमारे सब कुछ आप ही हो, लेकिन प्रभु को मानेंगे 'स्टीपनी' ! जब सब आधार टूट जाएं तब प्रभु को याद करेंगे। जैसे– जब गाड़ी पंक्चर हो जाएगी, तब ही स्टीपनी को याद करेंगे। यूं प्रभु को तभी याद करेंगे-उससे पहले नहीं।

सो, इस बार के कार्ड में लिखा है कि इन सारी मुश्किलों में जाने के बजाय, हर रोज़ अपनी बैटरी चार्ज कर लें। सुबह 15 मिनिट-रात को 15 मिनिट 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' रट लें–लेकिन प्रगट की स्मृति में लय और लीन होकर ! **पर, हम हैं कि जब हमारी सारी कोशिशें नाकामयाब हों, सारे आधार टूट जाएं तभी हम प्रभु को याद करेंगे** ! और... प्रभु की भी तो यह विशेषता है कि हम हर बार आखिर में उन्हें बुलाएंगे, तब भी वे सबसे पहले आकर हमारा काम करेंगे।

हम कहते हैं कि हम ऐसे निर्मानी प्रभु के सेवक हैं, तो व्यवहार में हम भी इतना तो रखें कि– कोई बुलाए ना बुलाए, लेकिन अपना प्रसंग समझ कर हम पहुँच जाएं...

मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने तो कैसा उदाहरण दिया है कि– **प्रभु हमारी ओर यूं देखते रहते हैं, जैसे कोई कामी व्यक्ति किसी स्त्री को देखता रहता हो कि यह मुझे कब बुलाए।** इससे ज्यादा गरज क्या होगी ? और **हमें चिंता लगी रहती है कि प्रभु हमारा काम करेंगे या नहीं करेंगे।** हमें विश्वास नहीं है, क्योंकि हमें शास्त्रों की भनक पड़ी हुई है कि इतना-इतना करो तब ही प्रभु काम करते हैं। ऐसा नहीं है। एक बात खूब समझ कर रखें कि प्रभु को एक कायदा है। वैसे वो टोटली-संपूर्ण स्वतंत्र हैं; फिर भी वो अपने आप एक कायदे से बंधे हुए हैं। वो कायदा कैसा है सुनो !

जो उसका भरोसा करता है, उसका भरोसा वो टूटने नहीं देते।

वो उनकी ख़ानदानी है कि हम उनके भरोसे पर जो बैठे हैं, वह वे टूटने नहीं देंगे, सहाय करेंगे ही करेंगे। प्रभु हर कोई बदनामी झेल लेंगे, पर 'उन्होंने भक्त का भरोसा तोड़ा'– वो बदनामी वो सह नहीं सकते। तो, अब आखिर टाईम पर उन्हें

याद करने के बजाय हम उन्हें हमेशा याद करा करें। हम कहेंगे-हमेशा याद करना-स्मृति में रहना तो बड़ा मुश्किल है। **मुश्किल नहीं है, हमें करना नहीं है।**

तो, प.पू. काकाजी ने दूसरा रास्ता बताया है कि सुबह 15 मिनिट-शाम को 15 मिनिट प्रगट की स्मृति में लय और लीन होकर भजन कर लें–भले लोग पागल कहें, लेकिन उस समय फिर कोई और विचार नहीं करना। यूं सुबह-शाम बैटरी चार्ज कर लें। ट्रान्झीस्टर रेडियो में बैटरी पड़ी होती है, तो रेडियो बजता है ना ? इस तरह 15 मिनिट सुबह-15 मिनिट शाम को बैटरी चार्ज कर लेंगे, तो प्रभु से हमारा तार बना रहेगा। एक साईन्स है यह।

पर, यह करने में भी हमें कंटाला आता है। धून में ही उबासी आएगी, धून में ही नींद आएगी, भजन करने बैठेंगे तभी दूसरे विचार आएंगे-कंटाला तभी आएगा ! तुम तीन घंटे थियेटर में जाते हो या ये सिरियल्स जब देखते हैं, तब कभी घड़ी की तरफ देखते हैं क्या ? जब पूरा हो जाता है तो कहते हैं कि बस खत्म ! धून में तो कई कितनी बार घड़ी देखेंगे कि कितनी देर बाकी रही ? हिपोक्रेसी है हमारी यह ! बोलते हैं कि हमारे तो सब कुछ प्रभु ही हैं, पर हमें उसमें इतना इन्ट्रेस्ट नहीं है जितना इन चीजों में है। मैं हमेशा कहता हूँ ना कि लेट-शेट हो जाएंगे तो–कटौती कहां होगी ? शेविंग पूरा होगा, चाय पी लेंगे-अखबार भी पढ़ लेंगे-कटौती पूजा में होगी। सोचेंगे कि आज पूजा जल्दी-जल्दी कर लें।

सो, बाह्य व आंतरिक कुरुक्षेत्र हमें व्यथित ना करें, दुःखी ना करें, दर्द ना पहुँचाएं, ठेस ना पहुँचाएं इस हेतु हम यह नियम पक्का रखें और तन, मन, धन व आत्मा से सर्वथा, हर प्रकार से सुखी रहें !

(अन्नकूट के दिन प.पू. गुरुजी द्वारा करी कथावार्ता से संकलित)

✡✡✡✡✡

ओहो ! आराधना पर्व...

नवम्बर महीना अर्थात् पर्वों का महीना–जिसमें नूतन वर्ष की शुरुआत भी हुई ! और... इसे और अधिक स्मृतिमय बनाया प.पू. पप्पाजी के आराधना पर्व ने ! दीवाली के दिनों से ही **'पप्पाजी फार्म'** पर आराधना पर्व के रुप में गुरुहरि प.पू. पप्पाजी की ८५वीं जन्मजयंती मनाने की शुरुआत हो गई... 17 की सायं प.पू. पप्पाजी के सान्निध्य में बहनों की सभा हुई। साधक बहनों तथा अन्य हरिभक्त बहनों ने प.पू. पप्पाजी के प्रति अपने भाव प्रगट करे...प.पू. पप्पाजी ने सिर्फ दो वाक्यों में ही आशिष प्रदान करके इनका अभिप्राय बता दिया कि –

'मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय काकाजी ने दाखिल करी और बुलवाई, सो हम सब काकाजी को याद करे बिना रह नहीं पाते।'

अहो ! प.पू. पप्पाजी की कैसी कृपा है कि हर पल हमें किसी भी तरह यूं सूचित करते ही रहते हैं–मार्गदर्शन देते ही रहते हैं–ईशारा देते रहते हैं, पर हम हैं कि समझने तैयार ही नहीं !

अगले दिन 18 नवम्बर को आराधना पर्व की मुख्य सभा थी, जिसमें सभी गुणातीत स्वरुपों व प.पू. पप्पाजी की निश्रा में सभी ने खूब दिव्यता महसूस करी ! स्टेज़ की डेकोरेशन, बैठने-खाने की व्यवस्था आदि तो जैसे प.पू. पप्पाजी के प्रति गुणातीत ज्योत की बहनों की गुरुभक्ति, प्रीति, श्रद्धा, विश्वास और अत्यधिक परिश्रम का एहसास करा रही थी। सच्ची आराधना किसे कही जाए वह जान कर व प.पू. पप्पाजी की **'देह और घर मंदिर बनो...'** की आशिष प्राप्त करके सभी खूब कृतार्थ हुए।

तो, आइए हम सभी नए वर्ष में इन गुणातीत स्वरुपों को उनकी रीत से प्रसन्न करने कृतनिश्चयी बनें...

व्रतोत्सवसूची

(1) दि.11.12.2001	मंगलवार	– एकादशी, व्रत
(2) दि.16.12.2001	रविवार	– धनुर्मास प्रारंभ
(3) दि.26.12.2001	गुरुवार	– मोक्षदा एकादशी, व्रत
(4) दि.31.12.2001	सोमवार	– 'स्वामिनारायण' महामंत्र द्विशताब्दी
(5) दि. 9.1.2002	बुधवार	– सफला एकादशी, व्रत
(6) दि. 14.1.2002	सोमवार	– मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taddev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabad, Opp. Rohtak Road,Daya Basti, Delhi